युगपुरुष –म. म. राष्ट्रपतिसम्मानित संस्कृत–मनीषी आचार्य डॉ.नारायणशास्त्री काङ्कर डी.लिट्.

भावाञ्जलि

लेखिका - **श्रीमती इन्दु शर्मा काङ्कर**

आप संस्कृत साहित्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् कहे जाते हैं। आपके सुप्रसिद्ध विशाल व्यक्तित्व को सीमित शब्दों में लेखनीबद्ध करना बहुत ही दुष्कर कार्य है, किंतु फिर भी यह असंभव कार्य संपन्न करने का प्रयास इस लेख के माध्यम से कर रही हूँ। यद्यपि जिनके कार्यों की गणना करते करते हाथों की अंगुलियों के पोर कम पड़ जायें, ऐसे आप के किये हुए कार्य के प्रभाव की गणना सहस्त्रमुख से भी करना सम्भव नहीं है।

संस्कृत विद्या के लिए अपरा काशी कही जाने वाली गुलाबी नगरी जयपुर में जन्मे महामहिम राष्ट्रपति-सम्मानित ऋषियुग के महान् अन्तराल के पश्चात् वैदिक भाषा और वैदिक छन्दों में ही अपने काङ्करार्षेय भाष्य के साथ अपूर्व अनुपम और अद्वितीय " राष्ट्रवेद" के रचयिता महामहोपदेशक विद्यावाचस्पति जयपुर-राजगुरु पण्डित-मार्त्तण्ड श्री मधुसूदन ओझा जी के प्रिय अन्यतम अन्तेवासी महामहोपाध्याय पण्डित श्रीनवलकिशोर शर्मा काङ्कर जी के ज्येष्ठ पुत्र आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर डी.लिट्. भी अपने पूज्य पिताजी के समान ही महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित मनीषी हुए।

महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित संस्कृत-मनीषी आचार्य डॉ.नारायणशास्त्री काङ्कर संस्कृत साहित्य जगत् में इसी नाम से प्रसिद्ध हुए, किन्तु आपका मूल नाम ' श्री नारायणलाल शर्मा काङ्कर ' है। आपका जन्म दिनाङ्क- 13 जुलाई 1930 को जयपुर, राजस्थान में महामहोपाध्याय आचार्य पं. नवलकिशोर काङ्कर जी के विद्या-वैभव-भवन में हुआ। आपको विद्या वैभव विरासत में प्राप्त हुआ। संस्कृत के व्याकरण , साहित्य एवं सांख्य योग के विद्वान् के रूप में आपका संस्कृत गद्य और पद्य की रचना में समान अधिकार था। आप संस्कृत में कथा , निबन्ध , नाटक , काव्य आदि विविध विधाओं के लेखन में सिद्धहस्त थे।आपने गद्य में पन्द्रह हजार (15000) रचनायें कीं तथा पद्य में भी 15000 से अधिक रचनायें सम्पादित की हैं। आपकी लेखनी से साहित्य की गङ्गा अन्तिम क्षण तक अविरल प्रवाहित होती रही।

आप अपने उदार व्यक्तित्व के कारण लोकप्रिय साहित्यकार रहे। उदार, उदात्त उज्जवल छवि के धनी हुए। स्वभाव से अत्यन्त विनम्र , सरलहृदयी मधुरभाषी आप सादा जीवन , उच्च विचार को अपने रहन-सहन का मूल मन्त्र मान कर तदनुसार आचरणकर्त्ता हुए। जीवन में स्वावलम्बिता और आत्मनिर्भरता की शैली आपको गांधीवादी विचारधारा का अनुयायी बताती थी। वास्तव में साहित्यिक कर्तृत्व ही उसके रचयिता के व्यक्तित्व का उज्ज्वल दर्पण होता है, यह तथ्य आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के विषय में भी सटीक प्रतीत होता है। आपके साहित्यिक कर्तृत्व में व्यक्तित्व के अनेक पक्ष दिखायी देते हैं।

आचार्य, पी-एच.डी., डी.लिट्.की उपाधि प्राप्त डॉ. काङ्कर ने 3-7-1948 से 10-9-1958 तक महाराज संस्कृत कालेज, जयपुर में- 10 वर्ष तक अध्यापक रूप में अपनी सेवायें देने के पश्चात् 11-9-1958 से 18-11-1969 तक राजकीय आयुर्वेद कालेज में संस्कृत साहित्य-विवेचक के पद पर तथा दि. 19-11-1969 से 29-12-1978 तक संस्कृत प्राध्यापक के पद पर कार्य किया। बाद में राजकीय आयुर्वेद कालेज के राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान जयपुर (N.I.A.) के रूप में परिवर्त्तित हो जाने पर , इसी संस्थान में 30-12-1978 से 29-4-1985 तक असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में और दि. 30-4-1985 से 31-7-1990 तक एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत) के रूप में कार्य करते हुए दिनाङ्क-31जुलाई 1990 को सेवानिवृत्त हुए।

सेवानिवृत्ति के समय आचार्य डॉ काङ्कर जी ने कहा था —

"अन्ते पुनः प्राण-प्रियानपीदम्, आश्वासयामि स्वजनानिहाद्य।
अनावृत-द्वारमिदं गृहं मे, ज्ञेयं सदा संस्कृत-शिक्षणार्थम्॥४६॥
"यावच्छरीरं मनसा सहैव, वेविद्यते स्वस्थतमं ममेदम्।
तावत् सहर्षं गृह-संस्थितोऽपि, सेवां विधास्ये सकलस्य सर्वाम्॥४७॥

आचार्य डॉ काङ्कर जी अपने इस वचन का पालन अन्तिम समय तक 93 वर्ष की वृद्धावस्था में भी पूर्ण निष्ठा से करते रहे। प्रारम्भ से ही अपने निवास पर उपस्थित संस्कृत-शिक्षार्थियों को निःशुल्क संस्कृतशिक्षा-प्रदान करने एवं शोधार्थियों के मार्गदर्शन के साथ- साथ स्वयं मौलिक लेखन , सम्पादन , व्याख्यान एवं प्रकाशन द्वारा सरस्वती की समाराधना में अविरत संलग्न रहे।

डॉ. काङ्कर की देश की प्रमुख प्रतिष्ठित भारती (जयपुर), मधुरवाणी (गदक-कर्णाटक), संस्कृत-

रत्नाकरः(दिल्ली– पटना), चरित्रनिर्माण(हृषीकेश), भारती विद्या (अलमोडा), संस्कृतभवितव्यम्(नागपुर), संस्कृत साकेतः(अयोध्या), दिव्यज्योतिः(शिमला), संस्कृतम् (अयोध्या), भारतवाणी (पूना), विश्व-संस्कृतम्(होशियारपुर), चण्डी(प्रयाग), गुरुकुल-पत्रिका(गरुकुल, कांगडी, हरिद्वार), प्रज्ञालोकः(बैंगलूर), अमृतलता(किल्ला पारडी), स्वरमङ्गला(जयपुर), सुधर्मा : संस्कृत दैनिक पत्र(मैसूर), विश्वम्भरा(बीकानेर), गाण्डीवम्, संस्कृत साप्ताहिक(वाराणसी), परमार्थसुधा(वाराणसी), आयुर्वेदमार्त्तण्ड(श्रीगङ्गानगर), शारदा पाक्षिकी(पूना), ज्योतिष्मती(जयपुर), राजस्थान पत्रिका(जयपुर), शारदा (औरैया), देववाणी (बीकानेर), वैजयन्ती(बागलकोट-बीजापुर), जनसत्ता(दिल्ली), संस्कृत भाषा पत्रिका (पारडी), वेद- प्रदीप(नासिक), व्रजगन्धा(मथुरा), संस्कृत-मञ्जरी(दिल्ली), नवयुग-सन्देश(भरतपुर), सम्भाषण-सन्देशः (बैंगलूरु) आदि लगभग 160 पत्र-पत्रिकाओं, अभिन्दनग्रन्थों, स्मारिकाओं और पुस्तकों में संस्कृत तथा हिन्दी में गद्य में लगभग 15000 और इतनी ही संख्या में पद्यों में रचनायें प्रकाशित हुई हैं।

डॉ.काङ्कर ने संस्कृत में रचनाभ्युदयं महाकाव्यम् , संस्कृतसुभाषित-सप्तशती , राष्ट्र-स्मृतिः , संस्कृत –नाट्य- रत्नावलिः , संस्कृत-सुषमा-सप्तशती, 130 संस्कृत-कथाः, उणादिपदानुक्रम-कोषः, संस्कृत-कथा-पञ्चाशिका, लिङ्गानुशासन-कोषः, हार्दिकोद्गार-पंचाशिका, श्रीशिक्षकस्तवराजः, संस्कृतनिबन्ध-माधुरी, संस्कृतप्रचारप्रसारोपयोगी विंशति-सूत्रीकार्यक्रमः, संस्कृत-पद्यपत्र-पारिजातः, खोला-हनूमन् ! भगवन् !! नमस्ते, श्रीमाधवानन्द-वाङ्मय-पूजन-शतकम् , मानस – महाकाव्यम् आदि पुस्तकों का लेखन किया है।

डॉ. काङ्कर की राष्ट्रवेद, शास्त्रसर्वस्वम् , यात्राविलासम्, वीर-वीराङ्गना- वीथि, नवलसतसई , श्रौतमुनिचरितामृतम्, प्रबन्धमकरन्द, प्रबन्धामृतम् , पण्डित-पञ्चदशी , स्वामिगङ्गेश्वरानन्द- यजुर्वेदभाष्यम् , संक्षिप्त-कादम्बरी, द्विजदशाप्रकाश, धर्मकर्मसर्वस्वम्, ऐतरेयारण्यकम्, गोविन्द-गानम्, रसायन- वाजीकरण- दर्पण, आयुर्वेददर्शन-तत्त्व-विमर्श, संस्कृतकवितामृत-तरङ्गिणी आदि पुस्तकें व्याख्यात एवं सम्पादित हैं।

सन् 1970 से दैनिक अधिकार पत्र , जयपुर में ' संस्कृत-समाचारः ' स्तम्भ का और सन् 2006 से ' मूमल' पाक्षिक पत्र , जयपुर में ' देववाणी ' स्तम्भ का लेखन एवं सम्पादन का कार्य भी डॉ. काङ्कर का एक अनुकरणीय आदर्श कार्य है।

डॉ. काङ्कर की आकाशवाणी केन्द्र , जयपुर से 56 संस्कृत कथा , सोदाहरण वार्त्ता एवं काव्यपाठ का प्रसारण हुआ है।दूरदर्शन केन्द्र जयपुर से भी डॉ. काङ्कर ने संस्कृत में काव्यपाठ किया है।

महामहिम राज्यपाल, कुलपति और शिक्षामन्त्रीजी ने भी जहाँ आचार्य डॉ.काङ्कर-विरचित कतिपय पुस्तकों की भूमिका लिखी हैं, वहाँ कतिपय पुस्तकों का समर्पण म०म०राष्ट्रपति , राज्यपाल और मुख्यमन्त्री आदि ने भी स्वीकार किया है। आचार्य डॉ.नारायणशास्त्री काङ्कर जी के द्वारा रचित सम्पादित , व्याख्यायित , प्रकाशित और अप्रकाशित लगभग 250 पुस्तकें है।

राजस्थान , कोटा, कुरुक्षेत्र, उदयपुर, भरतपुर , रोहतक, इलाहाबाद , गुजरात, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान आदि विश्वविद्यालयों के लगभग 35 शोधार्थियों ने डॉ.काङ्कर की कृतियों पर शोधकार्य कर एम.फिल्.,पी-एच.डी.,डी. फिल्.,विद्यानिधि और विद्यावारिधि की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। आज भी कई शोधार्थी इनकी रचनाओं पर शोधकार्य कर रहे हैं।

डॉ. काङ्कर को अपने उल्लेखनीय विशिष्ट वैदुष्य के लिये प्राप्त प्रमुख सम्मान एवं पुरस्कार अधोलिखित हैं--

राष्ट्रपति सम्मान (भारत सरकार)-1997, मेरिट अवार्ड (राजस्थान सरकार)-1976और1992, स्पेशियल कॉन्ट्रीब्यूशन अवार्ड (संस्कृत निदेशालय,राजस्थान सरकार)-2002, हारीत ऋषि सम्मान (महाराणा मेवाड फाण्डेशन , उदयपुर)-2002 , संस्कृत साधना शिखर सम्मान (राजस्थान सरकार)-2010, पं.विष्णु शर्मा सम्मान (दिल्ली संस्कृत अकादमी)- 2012, महर्षि वाल्मीकि सम्मान (उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान , लखनऊ)-2015, साहित्य सर्जन योग्यता पुरस्कार (संस्कृत निदेशालय, राजस्थान सरकार)-1973-74,1989-90,1999-2000,2001-2002,2005-2006,2011-2012,2012-2013 , पं. हरिजीवनमिश्र नाट्य पुरस्कार (राजस्थान संस्कृत अकादमी)-1993 , माघ पुरस्कार (राजस्थान संस्कृत -अकादमी)-1995, अम्बिकादत्तव्यास-गद्य-पुरस्कार (राज० संस्कृत अकादमी)-1996, नवोदित प्रतिभा पुरस्कार (राजस्थान संस्कृत अकादमी)-1998, विज्ञान पुरस्कार (राजस्थान संस्कृत अकादमी)-1999, पं. श्री- रामधारिशास्त्रि –शास्त्र पुरस्कार (राजस्थान संस्कृत अकादमी)-2001, पं. चारुदेवशास्त्री गद्य-रचना पुरस्कार (दिल्ली संस्कृत अकादमी)-2003, कथा पुरस्कार- मद्रास संस्कृत अकादमी-1950, संस्कृत-भवितव्यम् साप्ताहिकपत्र नागपुर-1976, 1977,1980,1986, दिव्यज्योतिः शिमला-1960, दिल्ली संस्कृत अकादमी-2005-2006,2006-2007,2012, उत्तराञ्चल संस्कृत अकादमी हरिद्वार-2011, नाटक लेखन पुरस्कार- दिल्ली संस्कृत अकादमी-2008-2009,2009-2010,उत्तराञ्चल संस्कृत अकादमी ,हरिद्वार-2011, निबन्ध पुरस्कार- राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, जोधपुर अधिवेशन-1952, अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन दिल्ली-1955, समस्यापूर्ति पुरस्कार- दिल्ली संस्कृत अकादमी-2008-2009, उत्तराञ्चल

संस्कृत अकादमी,हरिद्वार-2011, 'आजीवन संस्कृत सेवा अलंकरण ' राजस्थान संस्कृत अकादमी 2022 , पंडित मोतीलाल जोशी स्मृति सुधी सम्मान 2022 , आस्था सांस्कृतिक संस्थान जयपुर अभिनंदन पत्र 2019,

आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर जी को पद्मश्री डॉ मंडन मिश्र पुरस्कार राजस्थान संस्कृत अकादमी जयपुर राजस्थान द्वारा मरणोपरांत वर्ष 2022-23 संप्रति दिया गया। साथ ही राजस्थान संस्कृत अकादमी जयपुर राजस्थान ने आपके पिता पं. श्री नवलकिशोर काङ्कर जी की स्मृति में वेद वेदांग पुरस्कार कल्लाजी वेद पीठ एवं शोध संस्थान, निंबाहेड़ा को प्रदान किया।

डॉ.काङ्कर विभिन्न संस्थाओं द्वारा विद्यालङ्कार ,वैयाकरण- केसरी, विद्यावारिधि, साहित्य- शिरोमणि, साहित्य- सुमेरु, मीमांसाकेसरी आदि सम्मानोपाधियों से भी अलङ्कृत किये गये हैं।

आप जैसे सेवाभावी उत्कृष्ट व्यक्तित्व के धनी देवतुल्य संस्कृत मनीषी के लिये जितना लिखें उतना ही कम है। आप अपना लेखनकार्य अन्तिम क्षणों तक सुचारु रूप से करते हुए, ईश्वन्दना करते हुए ईशसानिध्य में 3 फरवरी 2023 माघ शुक्ल त्रयोदशी विक्रम संवत 2079 को ब्राह्ममुहूर्त्त में हमेशा के लिये ब्रह्मलीन हो गये ।सब करुण प्रार्थनायें जैसे कण्ठ में ही अवरुद्ध हो कर रह गयीं । संस्कृत साहित्य के मार्गदर्शक प्रेरणास्रोत अनुकरणीय प्रेरक व्यक्तित्व हमेशा के लिये स्थान रिक्त कर गये। आपने महर्षी दधीचि की तरह ही अविस्मरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर देह को सवाई मानसिंह मेडिकल कालेज में दान कर दिया। आपकी इच्छा थी, कि मृत्यु के पश्चात् यह देह चिकित्सक विद्यार्थियों के अध्ययन के उपयोग में आये। आपने अपनी सेवामयी करुणामयी दयालु स्नेह की प्रतिमूर्ति सहज सरल पत्नी श्रीमती शान्तिदेवी काङ्कर की भी नौ वर्ष पूर्व देहदान की थी।स्वयं के देहदान की घोषणा आपने जीवित अवस्था में ही 2017 में पत्रिका के टी.वी. प्रोग्राम "यहाँ बसता है हिन्दुस्तान" में कर दी थी। यह सम्पूर्ण धारावाहिक आप को ही लक्ष्य कर निर्मित किया गया था। किं बहुना—

आज यहाँ शून्यता का साम्राज्य हो गया है,
बताओ तो कौन युगपुरुष यहाँ से उठ कर चला गया है,
लेखनी की स्याही को रिक्त कर गया है,
जीवन में खाली पन भर गया है,
बिखरी थी सब और शब्दावलियाँ ,
लिखते लिखते यह कौन रुक गया है .....